International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 398-399

लोहारू : इतिहास की नजर में

डॉ. रविन्द्र कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, महेन्द्रगढ, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

लोहारू का इतिहास हरियाणा के इतिहास में अहम् स्थान रखता है। वर्तमान मे लोहारू भिवानी जिले में राजस्थान की सीमा के साथ सटा हुआ है। आजादी की लड़ाई में यहाँ के वीरों का अहम् योगदान रहा। हालांकि हिन्दुस्तान 15 अगस्त 1947 को आजाद हो गया था मगर लोहारू रियासत को काफी संघर्षों व आंदोलनों के पश्चात् 23 फरवरी 1948 को आजादी प्राप्त हुई थी। हिन्दुस्तान की आजादी के समय लोहारू रियासत के नवाब ने इस रियासत को बीकानेर रियासत में सम्मिलित कर दिया था। इस कारण यहाँ के लोगों में भारी रोष फैल गया क्योंकि अधिकांश लोग पूर्वी पंजाब में शामिल होना चाहते थे। लोहारू के इतिहास पर हालांकि ज्यादा ऐतिहासिक सामग्री नहीं मिलती, यदि मिलती भी है तो वो टूटी फूटी कड़ियों में मिलती है जो ज्यादा विश्वसनीय नहीं कही जा सकती।

लोहारू के पूर्व विधायक स्वर्गीय चंद्रभान जी ने 'लोहारू बवानी' नामक पुस्तक लिखी थी। उन्होंने काफी घूम–फिर कर कुछ इतिहास को खंगाला था। उन्होंने अपनी पुस्तक में स्पष्ट लिखा है कि लोहारू रियासत की स्थापना 1803 ई. में हुई तथा 23 फरवरी 1948 ई. तक नवाब के कुशासन से ग्रसित रही। नवाब ने लोहारू की जनता पर भयंकर अत्याचार किए। अकाल के दौरान यहाँ के लोगों का बुरा हाल था। यहाँ की जनता ने नवाब का खुलकर विरोध किया परन्तु नवाब दिन प्रतिदिन कर बढ़ाता जा रहा था।

यहाँ सन् 1877 में भयंकर अकाल पड़ा। मढ़ोली कला नामक गाँव के एक वीर किसान बछा जाट ने नवाब के शासन का कड़ा विरोध किया और किसानों को नवाब के खिलाफ एकजुट करने का प्रयास किया। नवाब ने उस बछा जाट को तुरंत फांसी पर लटकरवा दिया। अतः बछा जाट की फांसी की बात संपूर्ण लोहारू क्षेत्र में फैल गई, अंततः उसका बलिदान रंग लाया। अब रियासत के लोगों के मन में नवाब के प्रति भयंकर आग देखी जाने लगी, चैहड़कलाँ नामक गांव में 6 अगस्त 1935 को लोहारू रियासत के लोग एकजुट हो गए और नवाब की कटु आलोचना की जाने लगी। नवाब ने स्थिति को भाँपते हुए अंग्रेजी सेना को बुलवा लिया और एकत्रित लोगों पर धावा बोल दिया तथा 50 लोगों को गिरफ्तार भी कर लिया। अब स्वतंत्रता की आग ठंडा होने का नाम नहीं ले रही थी। अतः दो दिन पश्चात् गोलियों की बौछार नवाब ने यहाँ प्रारंभ करवा दी जो कि जलियावाला कांड का ही दूसरा रूप माना जा सकता है। इतिहासकारों का मानना है कि इस गोलीकांड में करीब 35 व्यक्ति शहीद हुए। स्वामी स्वतंत्रानंद के कर्मठ प्रयासों से एक अप्रैल 1940 को लोहारू में आर्य समाज की नींव रखी गई और देखते ही देखते आर्य समाज से जुड़ने वाले व्यक्ति रियासती शासन से मुक्ति हेतु एकजुट होने लगे। आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव 29 मार्च 1941 को मनाया जा रहा था कि अचानक नवाब के सैनिकों ने इनकी सभा पर धावा बोल दिया। स्वामी स्वतंत्रानंद जी गंभीर रूप से घायल हो गए। इस घटना से सम्पूर्ण क्षेत्र में रोष फैल गया। अब गाँव–गाँव का प्रत्येक बच्चा रियासत शासन से मुक्ति के उपाय सोचने लगा।

शोषण से मुक्ति पाने हेतु 20 सितम्बर 1946 को यहाँ प्रजामंडल की स्थापना की गई जिससे आंदोलन में काफी तीव्रता आई। जब जनता अपने हितों के लिए बिल्कुल जागरूक हो चुकी थी। भारत को 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली और जवाहरलाल नेहरू देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने। लोहारू रियासत अभी नवाबी शासन से मुक्त नहीं हुई थी।

जब प्रजामंडल आंदोलन ने तेजी पकड़ी तो नवाब ने सोची समझी रणनीति के तहत लोहारू रियासत को बीकानेर रियासत में सम्मिलित कर दिया। अतः भड़की जनता का एक प्रतिनिधि मंडल दिल्ली में सरदार बल्लभ भाई पटेल से मिला और अपनी समस्या को आगे रखा। सरदार पटेल ने काफी सोचने के पश्चात् उन लोगों को संगठित होकर अपने अधिकारों हेतु संघर्ष करने की प्रेरणा दी। अतः लोहारू में प्रजामंडल कार्यकारिणी की आपातकालीन बैठक बुलाई गई जिसमें वैधानिक नीति के अंतर्गत कार्य करने का निर्णय लिया गया। जींद जिले के खोरड़ गांव में प्रजामंडल का महा अधिवेशन हुआ जिसमें प्रस्ताव पास कर बीकानेरिया महाराज से यह कहा गया कि लोहारू रियासत को बीकानेर में, यहाँ के अत्याचारी नवाब ने आम जनता की राय लिए बिना मिलाया है। यहाँ की जनता बीकानेर मे बिल्कुल भी नहीं मिलना चाहती, अतः आपको चाहिए कि सामान्य जनता का आदर करते हुए लोहारू राज्य का शासन प्रबन्ध हिन्दुस्तानी सरकार को सौंप दे। यदि इस तथ्य पर अमल नहीं हुआ तो मजबूरीवश आंदोलन को आगे बढ़ाना पड़ेगा। प्रजामंडल के अध्यक्ष सीतारमैया से प्रजामंडल प्रतिनिधि मंडल मिला और अपनी समस्या को रखा। प्रतिनिधिमंडल में प्रमुख रूप से पूर्व विधायक बूजाराम, पूर्व विधायक चंद्रभान आदि थे। अतः सीतारमैया ने उनको सौराष्ट्र के मुख्यमंत्री 'देबर' से मिलने को कहा। देबर ने उनको कहा कि बीकानेर रियासत के साथ विलय के पश्चात् उत्पन्न वैधानिक स्थिति को भाँपते हुए आप सभी अपनी रियासत के गाँव–गाँव जाकर पंजाब में विलय के पक्ष में लोगों के हस्ताक्षर करवा लाएँ। जल्दी ही आजादी के दीवानों ने इस कार्य को अंजाम

दे दिया। राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया व अकाली नेता तारा सिंह से लिखित अनापत्ति प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर लिया। अंततः प्रजामंडल आंदोलन के प्रयासों व आर्य समाज की एकजुटता व सामान्य लोगों के सामूहिक प्रयासों के फलस्वरूप 23 फरवरी, 1948 को लोहारू पंजाब रियासत का अंग बन गया। यहाँ जयनारायण सिंह को उपायुक्त व हरफूल सिंह को तहसीलदार नियुक्त किया गया। वर्तमान में यह हरियाणा प्रदेश के भिवानी जिले का उपमंडल है।

संदर्भ

1. पूर्व विधायक चंद्रभान कृत, पुस्तक ''लोहारू बवानी''
2. जगजीत सिंह कृत, हरियाणा राज्य का इतिहास
3. डॉ. रामनिवास गुप्त कृत, हरियाणा प्रदेश का इतिहास
4. राजेन्द्र सिंह कृत, हरियाणवीं इतिहास
5. पूर्व मुख्यमंत्री श्री हुक्कम सिंह कृत, वृतांत दादरी क्षेत्र व आस–पास का इतिहास।